VOL- VII | ISSUE- VIII | AUGUST | 2020 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 6.293 | ISSN 2349-638x

हिंदी व्यंग्य निबंध और शरद जोशी का साहित्य

डॉ. प्रकाश विष्णु काम्बले
सहायक प्राध्यापक,
महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर

शोधसार :

साहित्य का उद्देश मानव जीवन को स्वस्थ, सुंदर तथा उद्दात्त बनाना रहा है। साहित्यकार अपनी सामाजिक दृष्टि से समाज में व्याप्त विसंगतियों, विषमताओं, अमानवीयता, अनिष्ट रूढ़ि-प्रथा-परम्पराओं की आलोचना कर समाज को जीवनापन की सही दिशा दिखाता है। इस दृष्टि से अन्य विधाओं की तुलना में व्यंग्य का विशेष महत्त्व है। व्यंग्य की प्रेरणा ही समाजव्याप्त विसंगतियां होती है। व्यंग्य का उद्देश सुधार या परिवर्तन ही होता है। हिंदी व्यंग्य निबंध की परंपरा समृद्ध रही है। इसके प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र रहे हैं। भारतेंदु युग के प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुंद गुप्त आदि रहे हैं। द्विवेदी तथा शुक्ल युग में भी हिंदी व्यंग्य निबंध का विकास हुआ। हिंदी व्यंग्य को समृद्ध तथा विकसित करने का कार्य आजादी के बाद के काल के परसाई, जोशी, घोंघी, त्यागी, कोहली, पुणताम्बेकर आदि व्यंग्यकारों द्वारा किया गया। शरद जोशी ने अपने समय तथा संमाज में व्याप्त विसंगतियों को अपने निबंधों के द्वारा अभिव्यक्त किया। उनके साहित्य में अधिकतर राजनीतिक व्यंग्य नजर आता है।

***बीज शब्द** : व्यंग्य, व्यंग्य निबंध, शरद जोशी*

मूल आलेख :

भारतीय साहित्य विशेष रूप में संस्कृत साहित्य में व्यंग्य का विवेचन ध्वनि, व्यंजना और वक्रोक्ति के अर्थ में प्रयुक्त होता नजर आता है। हिंदी साहित्य के समीक्षकों तथा व्यंग्यकारों ने अपनी परिभाषाओं द्वारा व्यंग्य के स्वरुप को निश्चित करने का प्रयास किया। व्यंग्य समीक्षक हजारीप्रसाद द्विवेदी[1] अपनी परिभाषा में व्यंग्य के लक्ष्य, प्रयोजन तथा प्रभाव की चर्चा करते हैं। शेरजंग गर्ग[2] व्यंग्य की प्रेरक शक्ति के साथ उसकी शैली पर विचार करते हैं। श्यामसुंदर घोष[3] व्यंग्य को बौद्धिक वस्तु मानकर इसके मानवीय संवेदना तत्त्व की चर्चा करते हैं। डॉ. मलय[4] व्यंग्य की प्रहार करने की क्षमता तथा आलोचना तत्वों की चर्चा करते हैं। हरिशंकर परसाई लिखते हैं कि व्यंग्य जीवन के प्रश्नों से टकराए, जीवन से साक्षात्कार करें और जीवन की आलोचना करे। शरद जोशी की दृष्टि से व्यंग्य सामान्य मनुष्य के अन्याय, अत्याचार की अभिव्यक्ति का माध्यम है। व्यंग्यकारों तथा समीक्षकों की परिभाषाओं से व्यंग्य की विशेषताएं स्पष्ट रूप से नजर आती है। व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, आलोचना इसका मूल तत्त्व है, समाजव्याप्त विसंगतियां तथा विषमताएं व्यंग्य की प्रेरणा है, व्यंग्य का रिश्ता सामाजिक यथार्थ तथा सत्य से जुडा है, व्यंग्य विधा भी है और अभिव्यक्ति की सशक्त शैली भी है।

डॉ. मलय[5] व्यंग्य के स्वरुप के चर्चा करते हुए उसके विविध रूपों की भी चर्चा करते हैं। तीक्ष्ण वैदग्ध, विडम्बना, उपहास, हेयहास, निंदा विनोद, कटाक्ष, आक्षेप, खिल्ली उडाना, परिहास आदि। व्यंग्यकार अपने उद्देश के अनुसार इन हथियारों का प्रयोग करता है। मूलतः व्यंग्य आत्मानुभूति का साहित्य न होकर वह लोकमंगल का साहित्य है। व्यंग्य का मूल उद्देश्य 'बदलाव' है। हरिशंकर परसाई[6] सुधार के लिए नहीं बल्कि बदलने के लिए लिखते हैं। इसी कारण वे शाश्वत साहित्य के पीछे दौड़ने के बजाय अपने साहित्य के मिटने की बात करते हैं। यहां मिटने का मतलब साहित्य से नहीं बल्कि उन परिस्थितियों से हैं जो साहित्य में चित्रित हुयी हैं। शरद जोशी भी व्यंग्य का उद्देश्य समाज में बदलाव या परिवर्तन मानते हैं। वे लिखते हैं कि, "मेरा इरादा तो यह है कि जिसे में ठीक नहीं पाता हूँ उसे अपने लेखन के जरिये शर्म के उस बिंदु तक ले जाऊं कि वह अपना गलत स्वीकार करें। मैं उससे नफ़रत नहीं करता, चाहता हूँ कि वह बदल जाए।" इससे स्पष्ट है कि व्यंग्य का उद्देश्य बदलाव ही है।

वैसे तो भारतीय साहित्य में व्यंग्य परंपरा बहुत ही प्राचीन रही है। कबीर के पूर्व हिंदी कविता में व्यंग्य वक्रोक्ति के रूप में विद्यमान था। आधुनिक अर्थ में व्यंग्य का सबसे

पहला प्रयोग कबीर साहित्य में देखा गया है। कबीर ने व्यंग्य को आधार बनाकर तत्कालीन समाजव्याप्त विसंगतियों तथा बाह्यांडबर पर प्रहार कर समाज को सही राह दिखने का प्रयास किया। आधुनिक काल के पूर्व तक व्यंग्य का आधार काव्य ही रहा है। कबीर की व्यंग्य परंपरा को भारतेंदु हरिश्चंद्र ने विकसित किया। उन्होंने व्यंग्य को अपनी अभिव्यक्ति का आधार बनाकर इसे प्रतिष्ठित तथा विकसित किया। भारतेंदु काल में ही निबंध विधा का विकास हुआ। भारतेंदु काल की 'ब्राह्मण', 'हिंदी प्रदीप', 'कवि वाचन सुधा' आदि पत्रिकाओं ने व्यंग्य को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। भारतेंदु युग के प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुंद गुप्त, बदरीनारायण चौधरी आदि निबंधकारों ने सामजिक तथा धार्मिक विसंगतियों पर कड़े प्रहार किए तथा अंग्रेजी शासन की कड़ी आलोचना की। द्विवेदी युग द्विवेदी जी की नैतिकता तथा शैली की इतिवृतात्मकता ने व्यंग्य की धरा को बाधित किया। शुक्ल युग भी वैचारिक, समीक्षात्मक, मनोवैज्ञानिक निबंधों में व्यस्त रहा, परिणामस्वरूप व्यंग्य का विकास न हुआ।

सही मायने में स्वातंत्रोत्तर युग में हिंदी व्यंग्य को प्रतिष्ठा तथा विधा का दर्जा मिला। इस युग की विषमताओं ने व्यंग्य के पनपने में उर्वर भूमि तैयार की। स्वातंत्र्योत्तर युग की राजनीति, समाज, धर्म, अर्थ, संस्कृति, प्रशासन क्षेत्र की विसंगतियों ने इस युग के व्यंग्यकारों को लेखन के हेतु बाध्य किया। इस युग के हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, लतीफ़ घोंघी, रवीन्द्रनाथ त्यागी, श्रीलाल शुक्ल, प्रेम जनमेजय, ज्ञान चतुर्वेदी आदि व्यंग्यकारों ने समाजव्याप्त विसंगतियों की कड़ी आलोचना की। इस युग के व्यंग्य का नेतृत्त्व परसाई जी ने किया। स्वातंत्र्योत्तर युग की विषम परिस्थितियों के साथ व्यक्तित्व की बेबाकी उनके व्यंग्य की प्रेरणा रही है। परसाई जी अपने कथ्य की विसंगतियां तथा विषमताओं को इस अंदाज में प्रस्तुत करते हैं कि पाठक के मन में बैचैनी उत्पन्न होकर वह सोचने के लिए बाध्य हो जाता है। उनका रचना संसार विशाल तथा विविधता से भरा है। उनमें कथ्य के साथ शैली की भी विविधता नजर आती है। व्यंग्य के लगभग सभी रूपों को इनके साहित्य में देखा जा सकता है। इन्हें आधुनिक कबीर के नाम से ही जाना जाता हैं। ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित श्रीलाल शुक्ल अपने लेखन की शुरुआत व्यंग्य से करते हैं। शुक्ल जी अधिकतर राजनीतिक तथा प्रशानिक विसंगतियों को अपने व्यंग्य का कथ्य बनाते हैं। स्वयं सरकारी नौकरी में रहकर प्रशासन पर व्यंग्य करना उनकी लेखकीय प्रतिबद्धता दर्शाती है। रवीन्द्रनाथ त्यागी अपनी अभिव्यक्ति में व्यंग्य के साथ हास्य को भी अपनाते हैं। उनके 250 से अधिक व्यंग्य निबंध प्रकाशित हैं। विषयों की विविधता के साथ भाषा एवं शैली में भी विविधता है। वे अपने निबंधों में नए प्रतोकों, बिम्बों तथा उपमानों का प्रयोग करते हैं। मुसलमान परिवार में जन्मे लतीफ़ घोंघी अपने धर्म में व्याप्त विसंगतियों को अपना कथ्य बनाते हैं। वे अपने व्यंग्य में आक्रामकता के स्थान पर मीठे दर्द को अपनाते हैं। नरेंद्र कोहली के व्यंग्य में हमेशा विषयों की नवीनता नजर आती हैं। वे स्वयं मानते हैं कि मैं तभी लिखता हूँ जब व्यंग्य लिखने के लिए मेरे पास कुछ नया हो। वे व्यंग्य को गंभीर विधा मानते हैं और व्यंग्य में हास्य की सत्ता को पूरी तरह से नकारते हैं। अपने कथ्य को गहन, गंभीर बनाने के लिए वे व्यंग्य के सभी हथियारों को अपनाते हैं। शंकर पुणताम्बेकर ने व्यंग्य निबंधों के साथ व्यंग्य के सौंदर्यशास्त्र पर भी अपनी लेखनी चलायी। बालेन्दुशेखर तिवारी जीवन की लगभग सभी विसगतियों पर व्यंग्य प्रहार करते हैं। इनके साथ ही सुदर्शन मजीठिया, बरसानेलाल चतुर्वेदी, के.पी. सक्सेना, प्रेम जनमेजय, ज्ञान चतुर्वेदी, मधुबाला, इंद्रनाथ मदान आदि व्यंग्यकारों ने स्वातंत्रोत्तर काल के निबंध को विकसित करने में योगदान दिया।

शरद जोशी की व्यंग्य संबंधी धारणा बड़ी स्पष्ट थी। उनका व्यंग्य अपमानित नहीं करता, बेचैन करता है। जीवन का सूक्ष्म निरिक्षण और चित्रण उनकी रचना में नजर आता है। उनके व्यंग्य का उद्देश्य समाज में बदलाव या परिवर्तन ही था। उनके व्यंग्य में हास्य की सत्ता को देख उनकी आलोचना भी की गयी। लेकिन मूलतः शरद जोशी की यह प्रतिभा थी कि उन्होंने हास्य-व्यंग्य की रूढ़ सीमाओं को तोड़कर उन्हें एकात्म करने का प्रयास किया।[6] उन्होंने लगभग हर विधा में अपनी कलम चलायी। वे स्तंभ लेखन के साथ फिल्म लेखन तथा दूरदर्शन धारावाहिक का भी लेखन करते हैं। लेकिन उनकी व्यंग्यकार की छवि उनके व्यंग्य निबंधों में ही नजर आती हैं। उनकी वैचारिकता तथा कलात्मकता निबंधों में ही देखी जाती है। शरद जोशी ने अपने समय (1953-1991) की समस्त विसंगतियों तथा विषमताओं पर खुलकर व्यंग्य बाण चलाए। उनका लेखन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के भारत वर्ष में

बदलती विषम परिस्थितियों का आलेखन है। उनके निबंधों में चित्रित समाज अपनी समस्त विसंगतियों के साथ अभिव्यक्त हुआ है। आम आदमी का अभावग्रस्त तथा संघर्षपूर्ण जीवन उन्होंने बहुत ही नजदीक से देखा है। इस वर्ग के प्रति उनके साहित्य में अपार सहानुभूति नजर आती है। वे इस वर्ग के समर्थक हैं। इसके विपरीत अवसरवादी, लालची, सुविधाभोगी तथा संघर्ष से कतरानेवाले मध्यवर्ग के प्रति वे बड़े कठोर नजर आते हैं। वे समाज में व्याप्त जातीयता, धर्मांधता तथा छुआछूत आदि को देश एवं भारतीयता के लिए अभिशाप मानते हुए इसकी कठोर आलोचना करते हैं, भारतीयता को अहमियत देते हैं। उन्होंने समाज के बदलते नैतिक मापदंडों जैसे- भ्रष्टाचार, अवसरवाद, बेईमानी, चापलूसी आदि की आलोचना कर नैतिकता की पहल की है। वे प्रेम के पवित्र रूप को समाज के आमने दर्शाते हुए खोखले तथा अवसरवादी प्रेम की कड़ी आलोचना करते हैं। स्त्री - पुरुष संबंधों के साथ दाम्पत्य जीवन में आए बदलावों के परिणामस्वरूप परिवार व्यवस्था में आए विघटन को दर्शाते हैं।

स्पष्ट है कि एक समाज के सजग प्रहरी की तरह वे समाज की हर इकाई का तटस्थ निरिक्षण कर उसमें व्याप्त विषमताओं पर व्यंग्य बाण चलाते हैं।

शरद जोशी के व्यंग्य निबंधों का केन्द्रीय विषय राजनीति रहा है। उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में जब कदम रखा (1953) तब देश अंग्रेजों की गुलामी को तोड़कर लोकतंत्र की नीव बांधने की प्रक्रिया से गुजर रहा था। सामान्य आदमी को लोकतंत्र से मोह हुआ था। वह चाहता था कि लोकतंत्र में किसी भी प्रकार की विषमता न हो तथा सभी को सभी क्षेत्रों में उन्नति के समान अवसर मिले। लोकतंत्र का यही उद्देश्य भी है। शरद जोशी किसी राजनीतिक पार्टी या विचारधारा से न जिदाकर आम आदमी के जीवन को बदलने वाली राजनीति से अपने आप को जोड़ते हैं। उनकी दृष्टि से ऐसी राजनीति से जुड़ना मानव जीवन को बेहतर बनाने की लडाई से जुड़ना है। अपनी इसी दृष्टि के कारन सत्ता में रहने वाली हर राजनीतिक पार्टी उनकी आलोचना का लक्ष्य बनी। चरित्र की अनैतिकता, झूठ तथा फरेब, भाई- भतीजावाद, दलबदल के साथ जनता के शोषक बने नेता को शरद जोशी फटकारते हैं। नेता द्वारा चुनाव में अपनाए गए असंविधानिक कार्यों की वे आलोचना करते हैं। आपातकाल की वे खुलकर आलोचना कर इसे वैयक्तिक स्वार्थ के हेतु उठाया गया गलत कदम मानते हैं। भारतीय राजनीति के साथ ही अंतरराष्टीय राजनीति भी अपनी समस्त विसंगतियों के साथ उनके निबंधों में चित्रित है। द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका, हथियारों की दौड़, अमरीका की साम्राज्यवादी नीति उनके व्यंग्य का विषय रही हैं। राजनीतिक व्यंग्य की दृष्टि से उनके 'वोट ले दरिया में डाल', 'जादू की सरकार', 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे', 'जीप पर सवार इल्लियां', 'यथासंभव' आदि निबंध संग्रह विशेष हैं। वे राजनीति के साथ प्रशासन व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार, लालफीताशाही, तानाशाही को भी अपने व्यंग्य का विषय बनकर उसकी आलोचना करते हैं।

शरद जोशी धर्म में व्याप्त विसंगतियों पर खुलकर व्यंग्य करते हैं। कभी समाज को जीवनयापन का सही रास्ता दिखाने वाला धर्म जब स्वयं अपने कर्तव्य से विमुख जाता है तो एक सजग व्यंग्यकार धर्म के ठेकेदारों को आड़े हाथो लेता है। साधु- संतों का भ्रष्ट आचरण, ऐयाशी, कामुकता, साधारण जीवनयापन से अधिक भौतिकता को दिया गया महत्त्व आदि को देख व्यंग्यकार इसकी आलोचना ही नहीं करता बल्कि संतों-मुल्लाओं के आचरण में सुधार की भी अपेक्षा करते हैं। वर्तमान समय में धर्म राजनीति का एक आवश्यक अंग बना नजर आता है। धर्म राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। राजनेता तथा राजनीतिक पार्टियां धर्म का आधार लेकर जनता को उनकी मूल समस्याओं से भटकाकर धार्मिक राजनीति कर रहे हैं जो व्यंग्यकार की दृष्टि से सशक्त लोकतंत्र के लिए बड़ा खतरा है। वे इसका खुलकर विरोध करते हैं। व्यंग्यकार का ध्यान सांस्कृतिक अधपतन की यथार्थता से दर्शाना रहा है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष के रूप में यही कहेंगे कि शरद जोशी स्वातंत्रोत्तर हिंदी व्यंग्य निबंध के सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनके व्यंग्य निबंधो में उनके समय की राजनीतिक, सामजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा प्रशासनिक आदि क्षेत्रों की परिस्थितियां अपनी समस्त विसंगतियों के साथ चित्रित हुयी हैं। व्यंग्यकार इन विसंगतियों को कभी केवल यथार्थ रूप में दर्शाता है तो कभी बड़ी बेबाकी के साथ कठोर आलोचना करता है। शरद जोशी के व्यंग्य के केंद्र में राजनीतिक विसंगतियां अपनी समस्त बुराईयों के साथ चित्रित हैं। वे

समाज के सजग पहरी बनकर न केवल इन परिश्तितियों की कड़ी आलोचना करते हैं याने इनके बदलाव की संभावनाओं को ध्यान में रखाकर ही इस्सकी आलोचना करते हैं। हिंदी व्यंग्य निबंध के विकास में आशय, विषय, भाषा एवं शैली की दृष्टि से सभी प्रकार की विविधता शरद जोशी के साहित्य में देखी गयी हैं।

संदर्भ ग्रंथ:

1. द्विवेदी हजारीप्रसाद, कबीर, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1951, पृ.164
2. गर्ग शेरजंग, स्वातंत्रोत्तर हिंदी कविता में व्यंग्य, दिल्ली, दिनमान प्रकाशन, 1973, पृ.23
3. सं.श्यामसुन्दरदास, हिंदी शब्द सागर, खण्ड 22, दिल्ली,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, पृ.421
4. मलय, व्यंग्य का सौदर्यशास्त्र, इलाहबाद, साहित्यवानी प्रकाशन, 1983, पृ.121
5. वही, पृ.90-98
6. परसाई हरिशंकर, सदाचार का तावीज, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1985, पृ.9

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com